राष्ट्रीय धारा के सचेत हस्ताक्षर ''सुब्रह्मण्य भारती''

डॉ. पी. राजरत्नम
सह-आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग
तमिलनाडु केंद्रीय विश्वविद्यालय
तिरुवारूर - 610005

कहते हैं जहाँ रवि नहीं पहुँचता है वहाँ कवि पहुँचता है। तात्पर्य है हर रहस्यात्मक भाव, गुण एवं विषयों को बाहर लाने की क्षमता रखता है कवि। उसी प्रकार और एक संदर्भ में कहा जाता है कि कवि त्रिकालजयी/त्रिकालदर्शी होता है यानी वर्तमान, भूत एवं भविष्य सब की जानकारी रखनेवाला ही कवि है। तमिल के सुप्रसिद्ध महाकवि ''भारती'' अपने युग से बहुत आगे थे। धरती के भाग्य से ही युगों में ऐसा कोई महान कवि जन्म लेता है और भारत देश भाग्यवान है कि ''भारती'' का जन्म, इस देश में हुआ। ये तमिल के कवि थे फिर भी उन्हें राष्ट्र कवि ही माने जायेंगे, क्योंकि उनकी अधिकांश कविताएँ एवं लेखों में दलित भारत की मूक भावना मुखरित हुआ है। भारती का जन्म 11 दिसंबर, 1882 को तमिलनाडु के तिरुनेलवेली जिले के एट्टयपुरम नामक गाँव में हुआ। उनकी माता लक्ष्मीदेवी थी और पिता चिन्नस्वामी अय्यर थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर उनके पिता के द्वारा हुई। पिता सुब्बैया को (भारती) अक्सर अपने साथ ही राजसूया में ले जाया करते थे। बचपन से ही पराशक्ति माता से कवित्व का वरदान पाने के लिए दिल मचल रहा था। उनके अंतर का सुप्त कवि और जागने लगा। ग्यारह साल की उम्र में ही सुब्बैया (उसे सब प्यार से सुब्बैय नाम से पुकारते थे) को भारती की उपाधि से अलंकृत किया। विरले ही कवियों ने इस बाल्यावस्था में इतनी बड़ी उपाधि पाई होगी।

हमें उक्त शीर्षक को समझने के लिए राष्ट्र एवं राष्ट्रीयता के बारे में समझना अत्यंत आवश्यक समझता हूँ।

राष्ट्र शब्द अंग्रेजी के नेशन (Nation) शब्द के पर्याय के रूप में ग्रहण किया जाता है। 'नेशन' की व्युत्पत्ति लैटिन भाषा के 'नेशियों' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है जन्म अथवा जाति। यह राज दीप्ती धातु से बना है। 'राजते दीप्यते प्रकाशते इति राष्ट्रम' अर्थात् वह भूखण्ड जो स्वयं प्रकाशित हो जो विदेशियों के पादाक्रान्त न हो, सर्वतंत्र स्वतंत्र हो वह राष्ट्र कहलाता है। देश भी उसी अर्थ का वाचक है। प्राचीन ग्रन्थों में शास्त्रों वेदों में भाषा, भूमि, जनसमुदाय आदि बल देने हुए विभिन्न अर्थों में राष्ट्र का प्रयोग हुआ है। दरअसल ये सब राष्ट्र के ही अंग है। देखने को मिलता है कि राष्ट्र शब्द समाज तथा राज्य सबके लिए व्यापक रूप में प्रयुक्त होता है परन्तु शास्त्रीय दृष्टिकोण के अनुसार राष्ट्र शब्द जो अंग्रेजी के नेशन शब्द का पर्यायवाची है, अपने में एक विशेष महत्त्व रखता है।

बर्गेस राष्ट्र के विषय में लिखते हैं – ''एक जनसमुदाय जिसकी भाषा एवं साहित्य रीति-रिवाज तथा भले-बुरे की चेतना सामान्य हो और जो भौगोलिक एकता – युक्त प्रदेश में रहता हो, राष्ट्र कहलाता है।

राष्ट्रीयता

''राष्ट्रीयता को लघु आकार प्रकार में परिभाषित कर पाना अपने आप में एक कठिन एवं दुरूह कार्य है, वह हृदयों की एक ऐसी एकता है जो एक बार बनकर विघटित नहीं होती है'' यह मनुष्य की स्वाभाविक वृत्तियों में से एक है जिसके कारण वह अपने राष्ट्र से एक विशेष प्रकार का लगाव रखता है और उसे सदा उन्नत तथा समृद्धिवाली देखने को उत्सुक रहता है। इसी भावना के आवेग से उन्मत्त व्यक्ति अपने राष्ट्र के कल्याण के लिए अपना सर्वस्व निछावर करने में तथा सहर्ष अपना-अपना जीवन तक अर्पण कर देने में अपना गौरव समझता है। जिस राष्ट्र में राष्ट्रीयता की यह चेतना जितनी अधिक बदलती होगी वह राष्ट्र उतना ही शक्तिशाली तथा समृद्ध माना जायेगा।

बालकृष्णवर्मा नवीन के तथ्य के अनुसार राष्ट्रीयता – ''मानव मन के असंख्य संवेगों मनोविकारों और मनोभावों के अनुरूप ही मानव हृदय में प्रेम-घृणा, ईष्या, द्वेष आदि मनोभाव विकसित और उन्नत होते हैं, उसी प्रकार राष्ट्रीय भावना भी मानवों के हृदय में विकसित, आलोडित और उन्नत होती है। ''

सुब्रह्मण्य भारती का जन्म तमिलनाडु में हुआ और उनकी रचनाएँ तमिल में ही हुई मगर तमिल और तमिलनाडु की संगीर्ण भावना से अपने को दूर रखकर संपूर्ण देश की ओर झुके थे। भारत की स्वतंत्रता, के आंदोलन में भाग लेने के कारण ''भारत'' का ही दृश्य उनकी दृष्टि में नाचता रहा न कि किसी संकुचित मनोभावना/दृश्य का। उनकी अधिकांश कविताओं में ''भारत देश'' का ही वर्णन एवं प्रशंसा मिलता है। सुब्रह्मण्य भारती को देश प्रेम और स्वाधीनता के कवि के रूप में तत्काल प्रसिद्धि प्राप्त हुई। 'हमारा देश' शीर्षक कविता में हिमगिरि का जग भर में सबसे न्यारा, पावन गंगा नदी, अनुपम उपनिषदों जैसी निधियाँ कौन समझते हैं? अर्थात् भारत भूमि में सब कुछ संभव है। उनका कहना है :-

यह वीरों की जन्म भूमि है
यह ऋषियों की तपोभूमि है।
गूंजे नारद के गीत यहाँ
सद्विषयों का सम्मान यहाँ
है अतुल ज्ञान भण्डार यहाँ
गूंज गौतम-उपदेश यहाँ।
अति प्राचीन देश यह प्यारा
वन्दन कर, सबसे यह न्यारा।

अर्थात् भारत वीरों की जन्म भूमि है, ऋषियों की तपोभूमि और जहाँ पर नारद के गीत गूंजते हैं। इस प्राचीन देश में अतुल ज्ञान व गौतम बुद्ध का उपदेश गूँज रहा है और एक संदर्भ में वे कहते हैं-

बाधाओं से हम न डरेंगे,
निर्धन होकर नहीं रहेंगे।
स्वार्थ भाव से प्रेरित होकर
नीच कर्म हम नहीं करेंगे
अपनी प्यारी मातृभूमि पर
दीन हीन बन नहीं जियेंगे।

कवि उक्त पंक्तियों के माध्यम से हमें यह समझाना चाहते हैं कि कभी बाधाओं से नहीं डरना, जिन्दगी में निर्धन होकर नहीं जीना है, कभी भी स्वार्थ भाव से प्रेरित होकर नीच काम नहीं करना और दीन-हीन बनकर इतनी प्यारी मातृभूमि पर नहीं जीना है। कितना बढिया विचार रखते हैं। वे भारत की जनता में विदेशी सत्ता के प्रति विद्रोह की भावना भरते थे। वे जनता को अज्ञान और भ्रम की गहरी निद्रा से जगाना चाहते थे। भावात्मक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से तन-मन में एकात्म भावना भरने का राष्ट्रीय धर्म निभाते थे। उनकी ''भारत देशम'' कविता में राष्ट्रीय भावना की झलक यूँ देख सकते हैं। जैसे :-

सिंधु नदी की इठलाती उर्मिल धारा पर
उस प्रदेश की मधुर चाँदनी रातों में।
केरल वासिनी अनुपमेय सुंदरियों के संग
हम विचरेंगे बलखाती चलती नावों में
मधुर-मधुर तेलुगु गीतों को गायेंगे।
सब शत्रुभाव मिट जायेंगे।

मानव, प्रकृति एवं अलग-अलग भाषाएँ तथा संस्कृतियों के प्रति उनकी सोच प्रशंसनीय है। हम कावेरी का जल देकर गंगा का गेहूँ लेंगे। हम चेर देश का हाथी दाँत देकर वीर मराठो की कविता लेंगे। काशी के विद्वानों की वाणी के कांची (जो तमिलनाडु में स्थित) में बैठे-बैठे सुनहरे यंत्र बनायेंगे। हम राजस्थानी वीरों को कर्नाटक का सोने देंगे। इससे पता चलता है भारती एक सच्चा राष्ट्रीय कवि है। उनके विचारों में भूमण्डलीकरण की भावना की झलक भी है। कवि का विश्वास है कि कांचीपुरम (तमिलनाडु) बैठकर ही काशी के विद्वद्जनों का संवाद सुनने योग्य यंत्र बनायेंगे, कन्नड़ प्रदेश का स्वर्ण खोद निकालकर जिसका सदुपयोग राजूप वीरों के वीरता एवं धीरता के लिए उन्हें स्वर्णपदक बनायेंगे। वे चाहते हैं कि रेशमी का वस्त्र बनाकर, उन्हें बेचकर एक ऊँची सी राशी देश के

लिए बना दें साथ-साथ उतना सूती वस्त्र को उत्पादित कर एक वस्त्रों का पहाड़ बनाकर उन्हें देश के कोने-कोने ले जाकर बेचेंगें एवं काशी के वणिकों को अधिक द्रव्य जो लायेंगे जिससे देश के बीच के शत्रुभाव मिट जायेंगे। राष्ट्र के प्रति उनकी सोच उत्तम है।

और वे चाहते हैं कि भारत देश में अस्त्र-शस्त्र एवं कागज का उत्पादन भी हों। भारतवासी सदा ही सत्य वचनों का ही पालन करें साथ-साथ औद्योगिक सुविधाएँ, पाठशालाएँ खोलकर इस देश के नागरिकों को ज्ञानवान बनायें। जनता को रंच मात्र के लिए भी विश्राम न करके हमेशा रचनात्मक कार्य में लगे रहने की प्रेरणा देते हें। भारत देश में असंभव बिलकुल न हो एवं असंभव को भी संभव बनाने की क्षमता लोग रखें। 'भारत देश' की कविता के माध्यम से हमें यह प्रतीत होता है कि वे सही रूप में एक राष्ट्रवादी कवि ही हैं।

छतरी बाड़े से और खीले से लेकर वायुयान तक हम अपने घर में ही तैयार करें। ''हमारे देश'' कविता में वे कहते हैं-

कृषि के उपयोगी यंत्रों के साथ-साथ ही
इस धरती पर वाहन भव्य बनायेंगे हम।
दुनिया को कंपित कर दें, ऐसे जलयान चलायेंगे।
सब शत्रुभाव मिट जायेंगे।

देश के जनता के बीच भौगोलिक एकता, जातीय एकता, सांस्कृतिक एवं इतिहास परंपरा की एकता, भाषा की एकता, धर्म की एकता तथा राजनीतिक एकता आदि राष्ट्रीयता के प्रमुख तत्वों को अपनी कविताओं के माध्यम से बनाने की कोशिश हुई है। एक संदर्भ में जातीय एवं वर्ण की बातों को वे यूँ समझाते हैं-

जो अछूत हैं, वे भी कोई और नहीं
वे भी तो रहते हम सबके साथ यहीं हैं।
अपने कहीं पराए होंगे
और हमारा अहित करेंगे
हम वंदे मातरम कहेंगे।

हर दृष्टिकोण से समग्र कविताओं में राष्ट्रीयता की झलक मिलती है।

जाति भेद एवं वर्ण भेद को लेकर उनका कथन है-

ब्राह्मण हों या अब्राह्मण हम सब समान हैं
इस धरती पर जन्म सब मानव समान हैं
जाति-धर्म का दम न भरेंगे
ऊँच-नीच के भेद तजेंगे।
हम वंदेमातरम कहेंगे . . .

उनके विचारों में भारतीय मंत्र-तंत्र सीखकर नभ को भी नापने की क्षमता रखेंगे और अनल सिंधु के तल पर से होकर निकल आयेंगे। उड़ान पर चढ़कर चन्द्रलोक में चन्द्रवृत्त का दर्शन करके मन को आनंदित पायेंगे। देखिए उनकी कल्पना साकार होकर आज हम सब वैज्ञानिक आविष्कार एवं उन्नति पाकर अपने को आनंद सागर में डूबा हुआ महसूस करते हैं। गलि-गलि के आदमी एवं औरतों को भी यहाँ तक श्रमिक वर्गों को भी शास्त्रज्ञान से अवगत कराना चाहते है। उनके सोच में यहाँ पर (भारत देश में) सरस काव्यों की रचना, अति सुन्दर चित्र, वन उपवन को हरे-भरे होने का, छोटे धंधे जैसे-सुई बनाना, बढ़ई का काम आदि का विकसित होने की आकांक्षा करते हैं। यही नहीं भारत भर में दुनिया के सब उद्योग यहीं पर ही स्थापित हों।

''भारत माता'' कविता में उनका विचार हैं कि

किन हाथों ने उत्कीर्ण किया
वेदों का यह संदेश:
''ब्रह्म है एक, हम सब उसकी संतान
जगत है मुख की नौका समान? ''
माँ भारती ने निज हाथों से
रची थी वैदिक ऋचाएँ।

कवि भारती अनेकता में एकता बनाकर रखने का संदेश देते हैं। जैसे – भगवान सबका एक ही है लेकिन हम उन्हें अलग-अलग दृष्टिकोण से मानते हैं। आखिर हम सब एक ही ब्रह्म की संतान हैं। राष्ट्रकवि सुब्रह्मण्य भारती का अद्वितीय स्थान है। दक्षिण भारत में ही नहीं बल्कि समग्र भारत में ऐसा कोई परिवार नहीं होगा जो उनके नाम से परिचित न हो। हिन्दी के राष्ट्रीय धारा के कविगण जैसे मैथिलिशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी जैसे कवियों के समान उन्होंने भी भारतीयों को अंग्रेजों के चंगुल से छुड़ाने के लिए अनेक तेजस्वी और ओजस्वी गीतों की रचना की। जैसे – ''एल्लोरुम ओरकुलम एल्लोरुम इंदिय मक्कल एल्लोरुम इन्नाट्टु मन्नरगल''

यानी हम सब एक कुल के हैं, हम सब भारत के वासी हैं, हम सब इस देश के राजा हैं उपर्युक्त कविता उनकी एक महान कविता है। आज भी प्रत्येक भारतवासी उनके गीतों को गुनगुनाते हैं। इसका एक ज्वलंत उदाहरण हम देख सकते हैं-

''मनदिल उरुदि वेण्डुम, वाक्किनिले इनिमै वेण्डुम
कार्यत्तिल उरुदि वेण्डुम, पेणविडुदलै वेण्डुम
उण्मै निन्ड्रल वेण्डुम।''

अर्थात् मन में दृढ़ता चाहिए, वचन में मिठास चाहिए, कार्य में दृढ़ता चाहिए, स्त्री स्वतंत्रता चाहिए, सत्य की स्थापना होनी चाहिए। देखिए कितना सुन्दर प्रतिपादन है। इनकी कविताओं में जातीय विशेषता, धर्म विशेषता का परिचय न होकर जनता के मन में राष्ट्रीय भावना जगाने के कारण इनको राष्ट्रवादी कवि कहने में कोई अत्युक्ति न होगी। इनकी समग्र कविता एवं लेख में अतीत की गरिमा, सांस्कृतिक परंपरा की पुन: स्थापना स्वाधीनता संघर्ष का चित्रण, राष्ट्रीय जागरण का आह्वान, वर्तमान की दुरावस्था का चित्रण, बलिदान की भावना (खुद अपने को एकता एवं देश के लिए अर्पित किए हुए व्यक्ति हैं) मातृभूमि की गरिमा का चित्रण सांप्रदायिकता एवं क्षेत्रवाद पर प्रहार एवं राष्ट्रीय एकता का प्रतिपादन आदि सभी भावनाएँ निहित हैं।

भारती की समस्त कविताओं, लेखों एवं विचारों में से ज्ञात होता है कि जितनी राष्ट्रीय भावना उभरती है उतना अन्य भारतीय कवियों की कविताओं में कुछ अभाव ही होगा। उनकी कविताओं के शीर्षकों में ही राष्ट्रीयता भरा पड़ा है। जैसे-''वन्दे मातरम'', ''मातृभूमि की वन्दना'', ''हमारादेश'', ''स्वतंत्रता का बिरवा'', ''भारत देश'', ''स्वतंत्रता देवी की स्तुति'', ''भारतमाता'', ''हमारी माता'', ''रोषयुक्त हमारी माँ'', ''भारत समाज'', ''जय हो सेनतमिल की'', ''गाँधी पंचकम'', ''स्वतंत्रता'', ''स्वतंत्रता का पल्लु'', ''नारी स्वतंत्रत की कुम्मी'', ''भारतवासियों की वर्तमान व्यवस्था, विजयनाद'', आदि। भारती के अनुसार सच्ची राष्ट्रभक्ति आध्यात्मिक होनी चाहिए; किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं कि हम परलोक की प्रकृति विषयक अपने विभिन्न दृष्टिकोणों को धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र निर्माण के क्षेत्र में घसीट ले आए। निस्सन्देह, हमारे यहाँ धर्म को लेकर मतभेद होने चाहिए, धर्म एक ऐसी वस्तु है, जहाँ समानरूपता अन्य वस्तुओं की अपेक्षा अधिक घातक सिद्ध होती है। किन्तु मातृभूमि की सेवा करते हुए हम सब एक मत, एक धर्म, एक जाती और एक वर्ण के हैं। हमारा लक्ष्य और आदर्श – एक ही है। जो भी माँ के मंदिर में प्रवेश करता है, वह पवित्र है। कहना चाहिए कि राज्य एवं मातृभूमि आदि शब्द, बातें और भावनाएँ भारती जैसे समर्थ कवि एवं क्रांतिकार के मुख से ही अच्छी लगती है। उपर्युक्त विचारों के कारण सुब्रह्मण्य भारती ने अपार सफलता प्राप्त की है सच में वे राष्ट्रीयता के सचेत हस्ताक्षर ही हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1. सुब्रह्मण्य भारती : संकलित कविताएँ एवं गद्य
2. उषाकांत आप्टे : हमारे राष्ट्र जीवन की परंपरा
3. जियराम पाठक : आधुनिक हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय चेतना का विकास
4. डॉ. देवराज पथिक : नई कविता में राष्ट्रीय चेतना